Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

PHP

फिलिप्पियों 1:1–11, फिलिप्पियों 1:12–30, फिलिप्पियों 2:1–18, फिलिप्पियों 2:19–30, फिलिप्पियों 3:1–21, फिलिप्पियों 4:1–9, फिलिप्पियों 4:10–23

फिलिप्पियों 1:1–11

पौलुस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने फिलिप्पी में लोगों को यीशु के बारे में बताया। इस कहानी का वर्णन प्रेरितों के काम अध्याय 16 में किया गया है।

पौलुस के फिलिप्पी छोड़ने के बाद, अन्य अगुवे और उपयाजक कलीसिया की सहायता करते रहे।

पौलुस की प्रार्थनाएँ फिलिप्पियों के विश्वासियों के लिए आनंद से भरी थीं। वे उनके साथ बहुत करीबी मित्र बने रहे। वे यीशु के बारे में सुसमाचार फैलाने में उनके साथी थे।

परमेश्वर ने विश्वासियों के हृदयों में काम किया और उनके माध्यम से अच्छा किया। पौलुस ने प्रार्थना की कि वे उसी प्रकार जीवन जीते रहें जैसा यीशु ने लोगों को जीना सिखाया था। तब वे यीशु की वापसी के लिए तैयार होंगे।

फिलिप्पियों 1:12–30

पौलुस ने कुछ भी गलत नहीं किया था, फिर भी उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया था। यह उनके लिए कष्ट और संघर्ष का समय था। फिर भी वे आनन्द से भरे हुए थे क्योंकि यीशु के बारे में सत्य प्रकट किया जा रहा था।

पौलुस ने अपने चारों ओर सभी को उपदेश सुनाया। इसमें उनके बन्दीगृह के पहरेदार भी शामिल थे। अन्य विश्वासियों को पौलुस के उदाहरण से प्रोत्साहन मिला। जब पौलुस बन्दीगृह में थे, उन्होंने यीशु के बारे में संदेश को और अधिक साहसपूर्वक फैलाया।

पौलुस को नहीं पता था कि बन्दीगृह में उनके साथ क्या होगा। चाहे वे जीवित रहें या मर जाएं, यह पौलुस के लिए महत्वपूर्ण नहीं था। पौलुस के लिए महत्वपूर्ण यह था कि मसीह को उनके जीवन के माध्यम से महिमा मिले।

पौलुस को विश्वास था कि वे बन्दीगृह से रिहा हो जाएंगे। उन्होंने फिर से फिलिप्पियों के लोगों से मिलने की बात की। उन्होंने कलीसिया को एकजुट होकर काम करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। जब वे यीशु के बारे में सुसमाचार का प्रचार कर रहे थे, तो उनके नगर में उनका विरोध किया जा रहा था। यीशु का प्रभु के रूप में अनुसरण करने से कष्ट और संघर्ष होता था। पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि पवित्र आत्मा उन्हें आवश्यक शक्ति प्रदान करते हैं।

फिलिप्पियों 2:1–18

यीशु से संबंधित होने के कारण फिलिप्पी के विश्वासियों के जीवन में कई आध्यात्मिक आशीषें आईं।

पौलुस ने समझाया कि विश्वासियों को इन आशीषों के कारण एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। विश्वासियों को दूसरों के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसे यीशु ने लोगों के साथ किया था।

यीशु हमेशा से प्रभु और परमेश्वर थे। परन्तु जब वे पृथ्वी पर थे, यीशु ने स्वयं को विनम्र बनाया। वे सेवा करने वाले अगुवे थे। वे कष्ट सहने और मृत्यु को स्वीकार करने के लिए तैयार थे। यीशु ने यह सब इसलिए किया क्योंकि वे लोगों से प्रेम करते थे और उन्हें बचाना चाहते थे।

भविष्य में, परमेश्वर द्वारा बनाई गई सभी सृष्टियाँ पहचान लेंगी कि प्रभु यीशु मसीह कौन हैं। यह परमेश्वर का संसार के लिए उत्तम उद्देश्य है। परमेश्वर चाहते हैं कि विश्वासी उनके उद्देश्य को पूरा करने का हिस्सा बनें। वे ऐसा यीशु के उदाहरण का अनुसरण करके करते हैं। उन्हें शिकायत और बहस नहीं करनी चाहिए। उन्हें एक-दूसरे और उन लोगों की सेवा करनी चाहिए जो विश्वासी नहीं हैं। यह उन्हें रात के आकाश में चमकते सितारों की तरह अलग करता है।

पौलुस इस बात से प्रसन्न और आनन्द थे कि यह फिलिप्पियों के बीच हो रहा था।

फिलिप्पियों 2:19–30

पौलुस फिर से फिलिप्पी की कलीसिया का दौरा करना चाहते थे। पौलुस विनम्र होकर योजनाएँ बनाते थे। उन्हें पता था कि

जो वे आशा करते थे, वह केवल तभी होगा जब प्रभु इसकी अनुमति देंगे।

उन्होंने फिलिप्पियों को प्रोत्साहित करने के लिए तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस को भेजने की योजना बनाई। ये पुरुष उन विश्वासियों के उदाहरण थे जो यीशु की तरह सोचते और कार्य करते थे। यीशु की निष्ठापूर्वक सेवा करना उनके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण था।

पौलुस ने तीमुथियुस और इपफ्रुदितुस को बहुत अधिक प्रेम किया। वे उनके लिए पुत्र और भाई के समान थे। इससे यह दिखता है कि परमेश्वर के परिवार में विश्वासियों के बीच कितना करीबी संबंध हो सकता है।

फिलिप्पियों 3:1–21

फिलिप्पी के विश्वासी आनन्द से भरपूर थे क्योंकि वे प्रभु के थे। फिर भी कुछ लोग सिखाते थे कि गैर-यहूदी विश्वासियों को यीशु के अनुयायी बनने के लिए खतना करवाना आवश्यक था।

पौलुस ने समझाया कि लोगों को खतना या किसी अन्य चीज़ पर भरोसा नहीं करना चाहिए जो मनुष्य कर सकते हैं। मनुष्यों द्वारा किया गया कोई भी कार्य उन्हें परमेश्वर के साथ सही नहीं बना सकता। पौलुस ने कई ऐसे कार्य किए थे जो उन्हें एक महत्वपूर्ण यहूदी के रूप में दिखाते थे। लेकिन उन चीजों ने उन्हें उद्धार नहीं दिया।

जो लोग यह मानते हैं कि यीशु प्रभु और मसीह हैं, परमेश्वर उन्हें बचाते हैं। पौलुस के सम्पूर्ण जीवन में आनन्द बना रहा क्योंकि वे मसीह को जानते थे। वे पहले से ही स्वर्ग के नागरिक के रूप में जी रहे थे। उनका भविष्य का लक्ष्य यीशु के साथ सदा के लिए रहना था।

यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर लौटेंगे। वे पृथ्वी पर सब कुछ अपने नियंत्रण में लाएंगे। परमेश्वर यीशु के अनुयायियों को मृतकों में से जिलाएंगे। पुनरुत्थान के समय उनके पास यीशु के समान नई देह होंगीं। पौलुस इस बात की लालसा करते थे। वे चाहते थे कि फिलिप्पी के विश्वासी भी यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें और वही लक्ष्य रखें।

फिलिप्पियों 4:1–9

पौलुस का फिलिप्पियों के विश्वासियों के साथ बहुत घनिष्ट संबंध था। उनमें से बहुतों ने यीशु के बारे में सुसमाचार साझा करने के लिए उनके साथ मिलकर काम किया था।

दो महिलाएँ आपस में असहमत थीं। पौलुस ने उनसे आग्रह किया कि वे साथ मिलकर काम करना जारी रखें।। इसको संभव बनाने वाली सच्चाई यह थी कि वे सभी प्रभु के थे। जीवन की पुस्तक के बारे में पौलुस का यही अर्थ था।

पहले, पौलुस ने फिलिप्पियों के विश्वासियों से कहा था कि वे वैसे ही सोचें और कार्य करें जैसे यीशु ने किया था (फिलिप्पियों 2:5)। यहाँ उन्होंने समझाया कि इसमें आनन्द से भरपूर होना और हर बात के लिए प्रार्थना करना शामिल है। इसमें सत्य, श्रेष्ठ और सुंदर बातों के बारे में सोचना भी शामिल है। इन बातों को करने और इन बातों के बारे में सोचने से परमेश्वर की शान्ति प्राप्त होती है। यह शान्ति विश्वासियों के जीवन के हर क्षेत्र में सहायता करती है।

फिलिप्पियों 4:10–23

बहुत बार फिलिप्पी के विश्वासियों ने जो उनके पास था, वह पौलुस के साथ साझा किया। उनके धन के उपहारों ने पौलुस को प्रेरित के रूप में अपना कार्य जारी रखने में मदद की।

जिस तरह से उन्होंने इतनी उदारता से दिया, वह ऐसा था जैसे उन्होंने परमेश्वर को उपहार दिया हो। यह भेंट थी जो परमेश्वर को प्रसन्न करती थी। इससे पौलुस भी प्रसन्न हुए।

पौलुस ने बहुत अच्छे समयों का सामना किया और उन्होंने बहुत कठिन समयों का भी सामना किया। उन्होंने यह सीखा कि जब उनके पास सब कुछ था, तब भी कैसे संतुष्ट रहें, और यह भी कि जब उनके पास आवश्यक चीजें नहीं थीं, तब भी कैसे संतुष्ट रहें। मसीह ने उन्हें यह समर्थ दी कि चाहे उनके साथ कुछ भी हो रहा हो, वे संतुष्ट रह सकें।

पौलुस और फिलिप्पी के विश्वासी एक ही प्रभु से संबंधित थे। इसलिए पौलुस जानते थे कि परमेश्वर यह सुनिश्चित करेंगे कि फिलिप्पियों के विश्वासियों के पास भी, उनकी आवश्यकताएँ पूरी हों। परमेश्वर अपनी अद्भुत संपत्ति उन सभी के साथ साझा करते हैं जो मसीह के हैं। पौलुस आत्मिक आशीषों की बात कर रहे थे। परमेश्वर के लोग उन्हें महिमा देते हैं क्योंकि वह उनके साथ जो अद्भुत उपहार साझा करते हैं।